

राज
कॉमिक्स

₹ 6.00 संख्या 405

ये है डोगा

इस कॉमिक्स
के साथ
डोगा का एक स्टीकर
मुफ्त



कानून से आरत किचौनी खेलेगा!
जुर्म की दुनिया में मचाएगा तहलका....

ये है डोआ

लेखक : तरुण कुमार वर्दी , संजय भुप्ता
चित्रकला : मनु
सम्पादन : मनीष भुप्ता



डोआ की कहानी जानना
उत्तर चाहेंगे आप। डोआ कैसे बना ?
ये मैं आपको बता रहा हूँ उसकी
कहानी 'ये है डोआ' में।...

....लेकिन सबसभ्यर
करता हूँ। डोआ की कहानी
पढ़ते वकत आपकी आंखों से
रक्त भी आसू न बरे। अगर
ऐसा हुआ तो केशि जगहों में
एजा डोआ का लिखत
बेहोशी में भी तडप
उठेगा।

अच्छे इंसानों को सिर्फ का बारा जगते होते आये।
अब अली तं ठेका का प्रयोग कॉमिक्स 'कपट' अदरक पर है।



देखन, कसाई, ठाकुर, इत्यादि, किन्तु नाम से पुकारने में
उस शैतान को -



कुत कहता था वो जलिन, उस मासूम को -



वह मासूम, निर्दोषों की लाशों सड़क पर फेंक आता था।



उस सशस्त्र स्कूल के किल्ले आंसू झलकने को तैयार हो जाते थे उसकी आंखों से -



नेकिन उन्हें झलकने नहीं देता था ॥

आंसुओं के उस स्कूल को भी जलता था वह।

पन्द्रह बरस का बच्चा स्कूल के आंसूओं का येताव साठे में
तड़पते लजा उस दिन -



आह, नहीं! छोड़
दो मुझे। उर।



बहुत शोर मचा रही है। हलकान
के आगे आघातें हलक में धुट
जाती हैं लड़की!

कौन है वो
लोहासिंह?

सरदार! एक बड़े भट्टा
मरिफत की छेरी है। इस
पन्द्रह-बारस की
आसानी है।



किसके बाप को फिरोजी की
चिट्ठी भेजी?

भेज ही है सरदार!
जमीरा जवाब लेकर
आता होगा।

सरदार!



क्या जवाब लाया है
रे जमीरा?

सरदार! छेरी के बाप ने
पुलिस में शक करके कस ही है।



क्या?

लगता है केंटी प्यारी
नहीं है उसे। दोस्ता
प्यारी है। लोहासिंह!
एक पत्र और फेंक
कर आ उसके कुंहे
पर।

बेहद कासूस थी तो लड़की। कसाइयों के पजे में कैसे बिड़िया थी।

मुझे बाहर निकालो। प्लीज! कहीं कससी का अरे बिना रो-रो कर मुरा हाल होगा।



हृदय धकनी हो रहा था उसकी कसप प्रकार से

...पर वह पत्थर बना रहा --

खाना खाओ।



नहीं! मैं नहीं खाऊंगी। तुम भी शैतान हो उस सब की तरह।

मैं मर जाऊंगी। पर तुम्हारे हाथ का खाना सूऊंगी भी नहीं।



मैं तुम्हारी सूस्त भी नहीं देखना चाहती। चले जाओ। चले जाओ!

बेरहम... हृत्कारे... कसाई... दरिन्दे हो तुम सबके सब। कुत्ते हो, जो दूसरों का जूठा खाता है।





जाने क्यों उसे क्रोध आ जब लड़की पर, और -

रोटी का अपमान करके तुमने मेरे क्रोध को भड़का दिया है लड़की! खाना खाओ। करना भरपूर से पहले मैं तुम्हारा हाथ काट दूंगा।

अ... खाती हूँ।
ऊँ-ऊँ...



अच्छी गारूकिया कर वहकर भी सुककरा न सके छेठ -

क्या नाम है तेरा ?

सोनिका।



शायद तुम्हें नहीं पता कि ये हरिन्दे तुम्हें सुबह साहसास कर देनेवाले हैं।

तुम अपनी कां से कहकर तुम्हें यहाँ से निकलवा दो न प्लीज।

खिलकर आया। आंसुओं का सैलाब बड़ी लुश्किल से रोक पाया वह -

पर वहाँ से छूटकर तू आएगी कहां ? तेरा सौतेला बाप तुम्हें जिन्दा देखकर खुश नहीं होगा।

क... क्यों ?

दो आदमी ने तुम्हें रास्ते से हटाने का लिए छेठे लाटक सौला है। कल एककनसिंह को तेरे पिर की एकज में कटा करवा रखे लिय जाएंगे। मैं ने अपने कानों से ये सब सुना है।



नाही।



वह सुनकर उस नरसुन के भी आंसु झूव गए। आंसों कीरल हो गईं।



ये हे होगा

पानी की राशानी सी सड़ी पहाड़ियां सोनु नाग की
उस किरण को भी अधकार के डुबो देनी, यह वह
नहीं जानता था।



अह! सूरज

सोनु! सोनु!!
आह!!

सूनी नदी के नाम से प्रसिद्धी वह जगह -



आह!
(बुल्युप)

अभी सोनु की घंटों उसके कानों में बिघले
सीसे सी पड़ रही थीं।



सूरज!! सूरज!!

सोनु!!
सोनु (बुल्युप)

दूर होने लगीं वे आवाजें।

पानी सा ही उठा वह। न जाने कब तक कटाकट शोर
गंवाती उस सूनी नदी के सीने में तलाश करता रहा
सोनु को -



सोनु! आवाज दे सोनु!
तू बुल्युप क्यों हो गई है। आवाज दे
सोनु! आवाज दे!

नदी से निकलकर वह सीधा पहुंचा पुलिस स्टेशन -



ये लड़का हुल्कासिंह
के बल का है सर! आपको
उसके अड़डे का पता
दवाना चाहता है।



आंसुओं का उखल उस की आंखों में तैर उठा -



हलकान सिंह का उड्डा! बता लड़के, बता कहाँ है?

इस नाम को सुनकर लम्बा जैसे गरिष्ठिका की सगरत जैसे एक साथ फट जायगी।

पुलिस पार्टी के लिए वह दरिवासी की रात थी।



भाबो पुलिस आह!!

धोया
धोया
धोया

हलकान का सरा नशा निश्चय ही काफूर हो गया होना यह सुनकर -



सरदर! भाबो सरदर! पुलिस को ले आया है वो कुत्ता!

पुलिस? क्या उस सांप को इसी दिन के लिए पावा था मैंने! उफ!

इसको की लशों के बीच हलकान सिंह और लोहासिंह की ही लशों न मिल सकी।।



हलकानसिंह एक बार फिर हमारी आंखों में धूल अंक कर फरार हो गया।

ये हे होगा

उसे बाल-सुधार गृह भेज दिया गया।



पर सोनी की वीखें उसे बाल-सुधार-गृह चारदीवारी में बांधे न रख सकीं -



हलकानसिंह को पाताख से भी डूँढ़कर मारुंगा।



महानगर बरबर्ही में पहराईण कर दिया उसने -

यहां रहकर वो ताकत हासिल करुंगा, जो हलकान के बखे में फांस की तरह चुभे जाए।



महानगर बरबर्ही। जिसके बारे में कहावत प्रसिद्ध है कि वहां बनसाल जागता बुरे पेट अवश्य है अगर सोला बुरे पेट नहीं।

दिलोदिनार में अपजती हुई ज्वाला के साथ पेट की कंधा भी समाप्त करना आवश्यक था।

उसने सरसे से जिनकोटी रेस्तरां पापे का होव्य में काम कर लिया।

ओए कुले ठे बट्टेया। ए बालकवर्षी केज नकर दस पर ले जा।



उसका अलीपापे का होव्य भी भी उसके साथ था।



??

याह

रबनाबाबा

किताबें-किताबें के लड़के

??

उनकी हड्डियाँ किसी का भी कोप बढ़ाने के लिए काफी थीं-



हय लैला! बड़ी खूबसूरत छेरी हैं।

हा हा हा हा

हा हा हा॥ एक नहीं चार-चार लैला हैं वहां लो।

उनमें से एक उत्तेजित हुआ-
रुक जाओ प्यारे! बेवजह लड़ाई-कमड़ा नहीं बढ़ना।

गुन्डा की तरह मारपीट करना लायक-किताब का उद्देश्य नहीं है। बेटा जसो

क्या बोला बेटू? गुन्डा बोला तू अपूज लो।



बहुत बोलने पर लिखरिया उठता वह बहुत -

बुद्ध बोलता है
-सादा अरुण को।



धड़क

एक किर्सी-जिम का लड़ाका। दूसरा लालन-जिम का जांबाज बॉडी-बिस्तर -



अगर उसके साथी बचिमें
बक-अप लिखर।
ये तो इस जवाब देंगे। अब्बया नहीं।

किर्सी-जिम। जो अपराधी
प्रशिक्षण-रहता था।
किर्सी के लोगों का



**न
झ
क**

और लालन-जिम! जहां बॉडी बिन्डिंग को
एक कला के रूप में सिखाया जाता है।

रेक्टरों तो किर्सी-जिम के लड़ाकों के आल-
वज के साथ ही खाली हो चुका था -

ओ 555

शानदार



बहुत दिवसों के साथ वह उस
जंग को देख रहा था -



धड़क

आह!

शानदार है
लालन-जिम के
जांबाज की जंग।

उठ अट्टो ! बहुत देर से तेरी
हड्डतें बढीशत कर रहा हूँ।



हर बढीशत नहीं हुई कितनी-जिम के टखनों का



पर मुकाबल कराना-जिम के जंघनों से पहली बार हो
रहा था कितनी-जिम के टखनों का -



रक-रक कर बेहूष सधा हुआ -



किनाक



यह लो ! ये सारा अफसो सरदारजी
को दे देना, तोड़-फोड़ का मुजावज
सुन्ही के जेब माहें।



आधी की तरह रेस्तरां से बाहर निकल गए टायन
जांकाज -

रेस्तरां में रहकर मेरा उद्देश्य
पूरा नहीं हो सकता। वैसे की तरह के
अपने शरीर को फौवाद बनाना
होगा। टायन जिम वही मेरा
लक्ष्य पूरा हो सकता है।



निश्चय तब ही तो लक्ष्य दूर नहीं रहे जाता।

टायन जिम।
मेरा लक्ष्य।



अदरक चाचा
टायन में खुद उस
जिम का कोच -

ऐसे नहीं। इस कसरत के
लिए पहले पूरी शक्ति लगा
कर सांस खींचो।



अदरक चाचा।
मुझे भी अपना शिष्य
स्वीकार करना होगा तब ही।

अपना पूरक कोरे दाखों लें कुक बना रहे -

मुझे अपना शिष्य स्वीकार करे अदरक दादा।

उठो। कौन हो तुम ?



अपने अमील के कानों का धका - उठो। यह एक कृपे बतलाया गया गया -



बखरि हो उठ लें उसकी पूरा बना सुन -

दादा - सुधार बूढ़ से भावकर आए हो, यही कारण पर्वित है तुम्हें अपना शिष्य न स्वीकार करने का।

नहीं। ऐसा कदा कहे अदरक दादा !



मासूम सोबू की दृष्टि वाकल कर देंगी तुमो।

यल-यल पिछले सीप सी चुकती रही है व कसप फुकार।

बकला है, यही कहीं से गुंज रही हैं वे धीरे। सूरज... सूरज... सूरज.



वही अमील लेकर आया हूँ मैं। अब आपने स्वीकार न किया तो अपनी कसप पूरी न कर सकूंगा।

जैसी आत्मा धिक्कारती रहेगी तुमो।



उपर-उपर से रहा व उम्मा छिप कर छल कने नहीं किया उसने आती आंख से रखा भी आंख।

मैंने शिष्य स्वीकार न किया उसे। किन्तु वहाँ रहकर 'जिम' की देखभाल करने की मेहरबानी उस पर अवश्य कर दी -



अदरक दादा के तरह-हस्त के बीचे छूना सभ्य भी बहुत है मेरे लिए।

जिम की उन शासक मर्यादों पे छाप पड़ेने तक उसके पूरे शरीर में कुम्हुरी नष्ट उठी थी।



यही हैं वे मर्यादें जिम से आकस्मी फौलाट हल जाता है।

विधिवत् शिक्षा न सही, सीखने की लगन हो तो देखकर ही बहुत कुछ सीखा जा सकता है।



मेरे शिष्यों के वलें जाने के पश्चात जिम की सफाई के समय वह उन वर्तों का प्रयोग करता था।



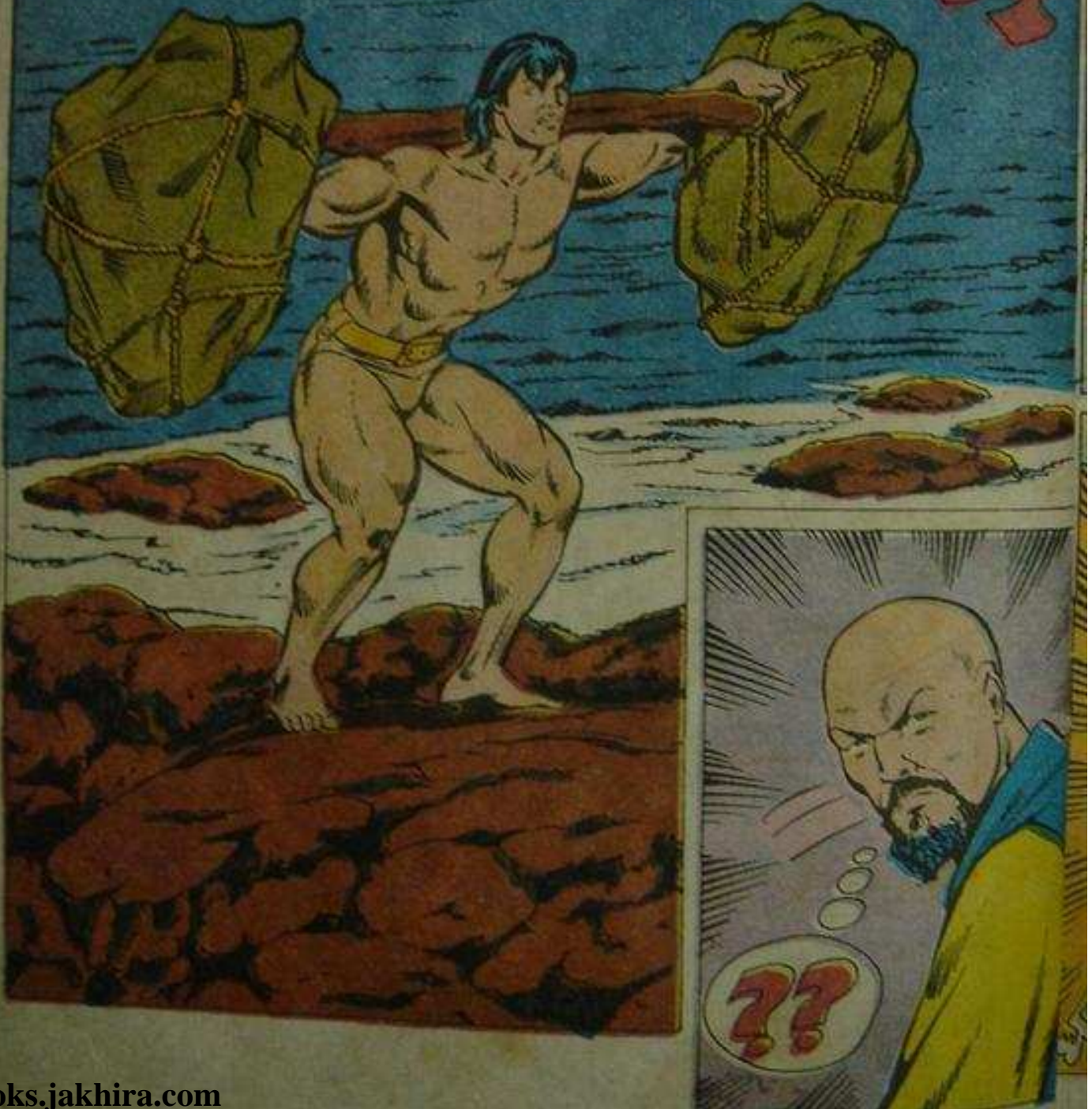
अदरक दादा का एक-एक शब्द जो वे अपने शिष्यों को सिखाते हैं मैं ध्यान से सुनता हूँ।



राज कोमकस

और उस शक्ति के बिना तो आखिर रहम आ ही
जाता उस पर। हाँ, तब जबकि गोरी नजर उस पर पड़ी।

याददादा



ये है होगा

किसी-जिम के किसी ने उसी शाम लालन-जिम में प्रवेश किया -



किसी-जिम के उन किसी का नेता था, बोटी-

किसी-जिम के गुरु किलोटा का संदेश में लुके देखे आया हूँ बुड़ढे !



उसके सम्बोधन पर खूने खौल उठा मेरे शिष्यों का।

फिर भी मेरे संकेत पर बखेड़ा कुछ धेर के लिए रुका-



अगले रविवार को शरीर सौष्ठव प्रतियोगिताओं में दुष्टारे जिम के कुत्ते जैदिले की कोखिण न करें, वरना लालन के पररक्ये उड़ा दिए जाण्डे ।

कहीं फुट ऊपर उड़ल गया बोटी-



अपनी और अपने साथियों की खेर चाहता है बोटी तो क्या ज वहां से।





ये है होगा

लड़के के दोहरे घर अकस्य के से आठ लें-

जिस्ने के साथ ही वार घिया बोली ले-



किंतु कुली के साथ उठा बोली
और उसने हवाच लिया उसे-

वह छटपटा रहा था और बोली
वार पर वार किए जा रहा था।



शरीर बजाना ही मरिथा है मैंने
टाहें। लड़ने में तो टहें सभी
अलाही हैं सिवाय अदरक
वाचा के। उस लजवा है क्या न
सकुंआ।

बोली पर हाथ उठवा है
तूने। तेरी लज ले कुंआ तुने!



गरदन पर जसे उसके पौ-
आती हाथ के शिकंजे ने उस
की सांसों को जोक रखा था-

उसे अभी जिन्दा रहना था शायद,
तभी वो मैं आ पहुँचा उसकी कूढ़ को-

तड़क



उसके बाद भाग लिया बोटी व भाग
लिए उसके साथी गुंडे।

कुंके छाना करें अबरक
चाचा! आपकी अनुमति
के बिना मैं इस जंग में वृद्ध
पड़ा, लेकिन मेरी आंखों
आपको जिसक कर दुश्मन
की की खरोच देखा
नहीं सकती थी।

पूर्णतरा: जम्भरि एा मैं -
सूरज! जानते हो आज
तक मैंने तुम्हें अपना
शिष्य क्यों नहीं स्वी-
कार किया?

छाना करें अबरक चाचा, के
नाम सूरज नहीं है। सूरज
तो अजले का प्रतीक है। मैं
असली नाम आप अर्क
तरह से जानते हैं।



जहाँ, तुम्हें हज़ारों नाम से पुकारेंगे जो तुम्हें तुम्हारी सोनू ने दिया था।

सुनो सूरज, जब उस वक़्त मैं तुम्हें अपना शिष्य स्वीकार कर लेता तो बदले की आग में तुम्हारे भक्ति का पौलाह कर जाता।

मैं चाहता था कि वह पौलाह... वह आग तब तक बढ़ती रहे जब तक तुम कुछ बन ना जाओ।

तुम्हें जिम में प्रैक्टिस करतें हुए मैं छिप-छिप कर देखता करता था। आज मैं सफल रहा। मेरा शिष्य न होते हुए भी तुमने जिस लकड़ व मेहनत के साथ सभी विद्याएं सीखीं। वह एक विशाल हेली लायन-जिम के लिए।

अदरक चाचा।



आज तुम वो बन गए हो मेरे बच्चे, जो यहां काले आए थे।

सूरज! आज मैं विद्विक्त तुम्हें अपना शिष्य घोषित करता हूँ।

चाचा! मेरे पास लेने के लिए बुरा कहिणा बहनी है, पर आपकी सिर भी मांने-ने तो खुद अपने हृदय से कट कर देना कर तुंम उसे आपके सामने।

अफ! अदरक चाचा! मैं आज तक न समझ सका हूँ गूढ़ बात को।



अगले दिन उसे जखम लेकर ही पहिया घुमा
दिसी लख लख काँचकर वह जखमी से बाहर आया।

सूरज! यह है
तेज भाई हलदी।
यह तुम्हें कस्टो
जिम्मा था।

हलदी बाबा
साधन अखिल के
सुपहारा स्वयं
करना है सूरज।



साधन अखिल का जखमी व हीनी कार्डिन का
की सुरत विपत्तों का फलित्वर-समय।



कस्टो का परिष्कार समझ जैसा घर था।

उसी दिन सूरज को जैले जिम्मा था दलिया बाबा से।

सूरज! यह है जैले तीमार
भाई दलिया और दलिया
यह है जैले जखमों से दिय
शिराय सूरज, जिसे तुम्हें
दाखिल जिरवाली है।
अगले कथम साधन-
अन में।

जखम अखिल, हसे में
टावरण से भी बड़ा
अखिल अनाऊगा।



साधन अखिल के कोय परिष्कार बाबा के संस्कार
में सूरज की बाखिल की प्रेरितमों बाबू से
अहै।



साधन अखिल की खुदिल जैली
गुंज उरी धमधमों से।

साधन अखिल जिम्मा कोय है बाबा कशी-
जिरी। कशीजिरी के पास पहुँचे हता उसी गल।

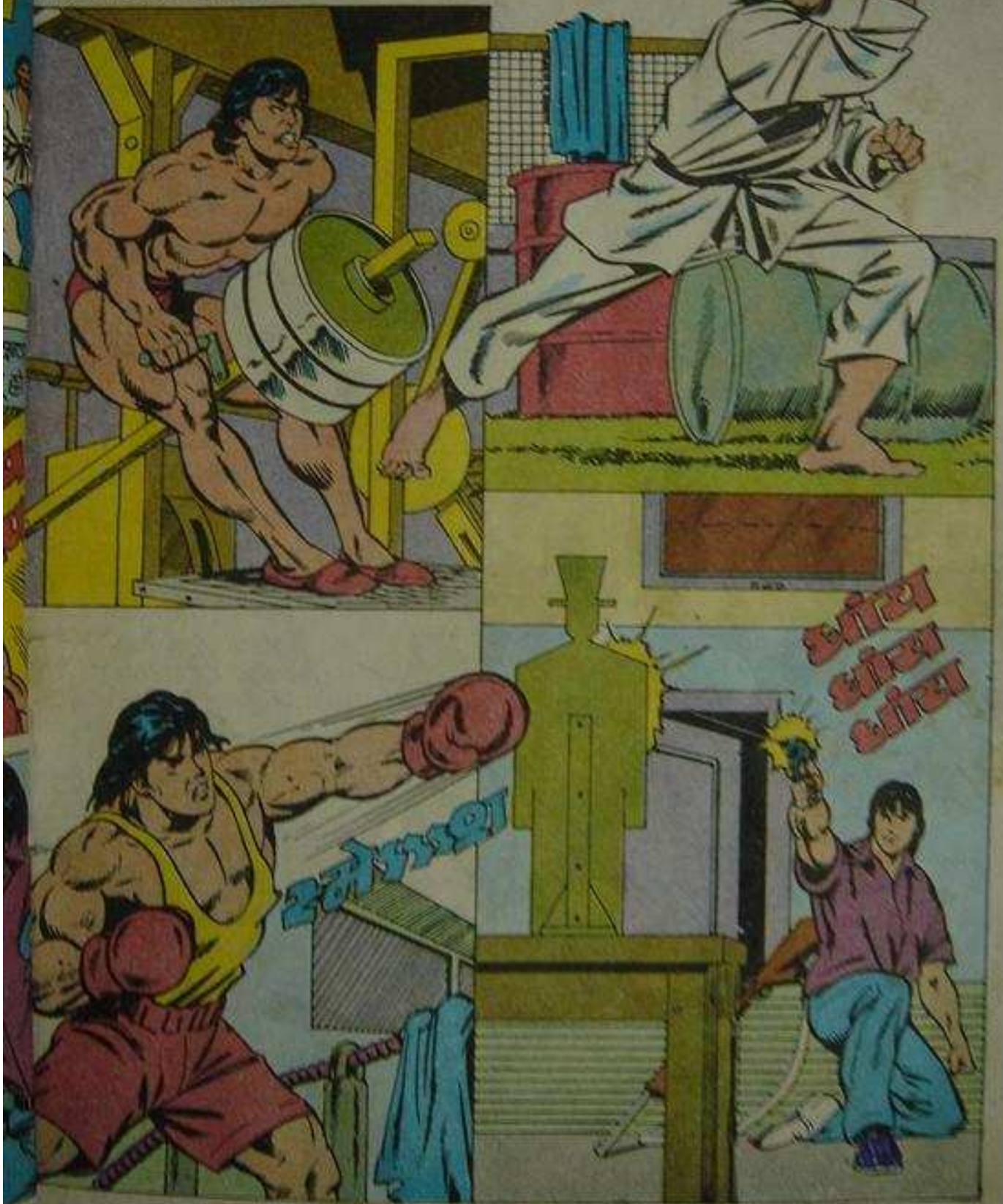
कार्पोरेटी, तुम्हें हमें
पावर अर्थात् की तुलिया
का बाखिल अनाना
है।

जिरीवर, रिक्टर, BLP,
कार्पोरेट, गे. के. 47, कार्पो-
रेट, रिक्टर, रिक्टर
से लेकर टैक और
कार्पोरेट टोला
तक चलाओ
शिराय हूंगा



ये है डोगा

उस की सुलह होती था कि मैं, दोपहर
भयान ओकल्ट में, पास था कि मैं तो
रात होती था कि मैं ऐसे कल्पना में।



दिन-रात शरीर बजावने में उसे रहने के अलावा एक शौक और था उसे कुत्तों से दोस्ती का। अपना छोड़-बहुत खाया समय वह इसी तरह व्यतीत करता था।

कुकु
कुकु
कुकु



मुझे वह कुत्तों से बात करना व कुत्ते उससे बातें करते महसूस होते थे।

सुरज जो भी कुत्ते तुमसे मिलते हैं तुम्हें प्यार, कैसे करने लगते हैं?

चाचा तुम्हें तो पता ही है कि कैसे जल्ल व जियल इन्हीं के बीच गुजरा है और इन्हें भी प्यार मिले तो इनसे बहुत करीब तक निकल आता है इस दुनिया में दो भी प्यार के कुर्रों होते हैं



ये है डोगा

सब दिन मैंने उसे एक अहम काम सौंपा -

सूराज अबले महीने जो बोडी-बिल्डिंग का कम्पीटीशन होने वाला है उसके लिए हमारे जिम के प्रतियोगियों की वह लिस्ट तुम्हें आयोगियों के पास जमा करानी है...



...और सावधान! कितनी जिम वाले इस लिस्ट की तजह से लुप्त-जान के पीछे भी पड़ सकते हैं।

अच्छक चाचा! वह लिस्ट आयोगियों के पास अवश्य पहुंचेगी, यह तोरा वरदा है।



एक जते ही जिम में घुसे कितनी-जिम के गूछे बोटी के साथ और इस बार वे थे इतिहासखण्ड।



कड़वी अदरक! कितनी जिम से उलकने का परिणाम नोबले के लिए तैयार हो जा।

इससे पहले कि जायन जिम के जांबाजों के शरिये में हककत होली बोटी की स्टेजजल में हककत हो गई।

हर साख बोडी-बिल्डिंग कम्पीटीशन में कितनी जिम जीतता आटा है और इस बार भी जीतता।

ढीं ढीं ढीं



विवाही विस्तों में वेपस्त होने लग बरुड।

ढीं ढीं ढीं ढीं ढीं



बरसों में मेहनत से बनाए जिम आ के बोरी की तरह निरने टबे।

अपने जिम व अपने जवानों की दुर्गीति देख विंदाइ उठ जै -

कलीजो, कहर जाओ। सूरा का खौफ खाओ। निहुरी पर तार कर अपनी कायस्था ना दिखाओ।



सिंहसुन्दर इतिहास में भी कहींना
नेकर किया वास्तव।

मेरा सुरज होता तो दुसरे
वह करिन्दगी न करले
केला।

धारा धारा

वां वां वां

उसका नाम सुनकर दौक उठा
बोटी-

सूरज! हाँ, वह
विला कहां है? वह नहीं
दिया। सुना है बहुत अंदी
उड़न कर रहा है वह।

बोटा बुझदे, कहां है वह विला।
केसू तो सही। कितना जोर है
उसकी बाजुओं में।

वह गया है बॉली-
बिलिंग कम्पिटिशन की लिए
जना कराने और उस कम्पिटिशन
को जीतकर वह कसूत करेगा तु
मसे इस करिन्दगी की कित्त।

कैरी बात सुनकर अद्वय पड़ा वह।
यतारे उसे रोवना हुआ।

मरी सड़क पर
घेर लिया गया
सूरज।

भाबे, वो वीरट हूँ वाहिर
जो बुझदे ने की है तुम्हें।

क्रोध से फड़क उठी थी
उसकी एक-एक मसल।

बोटी का निरहेबाज पकड़कर
दीख उस वह।

अद्वय वाचा का नाम
हज्जत से ले नीव।

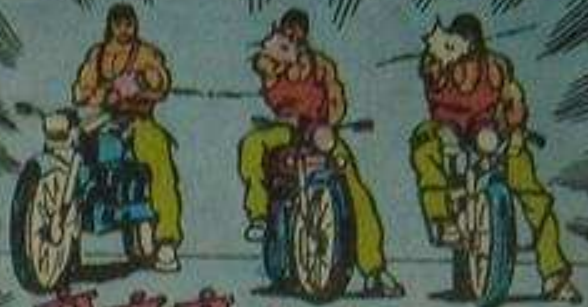
हैं अर्द्ध, मेरे हुए आदमी का
नाम तो हज्जत से ही लेना
वाहिर या तुम्हें।

सज्जाटा सा सिंघ गया सूरज
के दिलो-दिमाग में।

ये है डोगा

अपना केका उसने बोटी को -
बोटी। तेरी बोटी-बोटी
अपना कर लूँगा नीच
इंसान।

फिर निकल पड़े खुंखार शस्त्र और बूज ऊँ धक्के



वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ वाँ

किन्तु अब के धमके बहु कमाल ना कर पाए।

जो वह लपटा जिज में दिखा कर आए थे।



बखिठ भुजाओं का कमाल मारी-भरकम एनफिस्ट आ फी
ऊँ गुलें पर।



यह है लपटा जिज की
लपकल का कमाल।

और फिर यूरज ने किसी को समझने भी ना दिया।



यह है लपटा डेल की
लपकल का कमाल।

मोटर-साइकिलों पर सवार होने के कारण समझ ना सका
कोई।



यह है लपटा
ओपल की ट्रेनिंग
का कमाल।

सड़क पर पड़े एक रिवॉल्वर को कब्जाया उसने।



और यह है
कमाल बाटल
रस का।

सभी गुंडों के दुश्मने तोड़ डाले उसके सटीक डिप्लोमा



मोटर साइकिल पर सवार हो उड़ दला वह वापस बाटल
जिन की तरफ।



अदरक चाचा!
अब तुम्हारे साथ
इन्होंने कुछ नाजायज
किया होगा तो इनकी
सैर नहीं।

जिन में पत्र में अब तक तड़प रहा था। तड़पता भी
क्यों ना इतनी तेजगति से बकाया था मैंने जिन थ
शरीरों को वे मेरे सामने बेजान पड़े थे।



तभी तूफान की तरह वह अंदर प्रविष्ट हुआ।



अदरक चाचा!
अदरक चाचा! कहां हो
तुम आवाज दो।
बोलो।

सू...रज

मेरे जिंदगी छोड़ने को तैयार जिनको संभाला
उसने।



कुछ ना बोलो अदरक
चाचा, कुच्छे हास्पिटल
ले जा रहा हूं। कुच्छे ठीक
होना है। जिनका रू-
ना है कुच्छे सामने।

उन जवान लड़कों के पास पहुंचकर खड़ी उसने करस।

यह वह बिरु है जिस के कारण तुम्हारा कल हुआ। इसे काटता हूँ मैं, क्योंकि अब मैं इस से भी बड़ी प्रतियोगिता लड़ने जा रहा हूँ। निर्दोष व निर्दोष प्राणों को मरनेवालों की हत्या के लिये बिकल रहूँ जिसमें मेरी लतकर कबूल और अपराध दोनों से हूँगी।



तब जिस ने प्रवेश किया पुलिस ने जबकि वह उस से के अंधकार में शामिल हो चुका था।



छोटा से एक बड़ी लड़की लड़नी थी उसे और उसके लिए चाहिए थे हथियार भी।



इस घाने के मातृखाने में कल आतंकवादीयों पकड़े गए हथियार हैं जिन्हें आज मैं चुराऊंगा।

अंदर आज स्थिति बहुत कम थी जिसका फायदा हो रहा था, उसे।

घाने के अधिकार सिपही गए हुए हैं लखन जिम। बाकी सो रहे हैं और जो जने हैं उन्हें मैं सुझा दूंगा।



अब!

मातृखाने में घुस गया वह - यह देशद्रोहियों के हथियार अब रही हथियों में पहुंचे हैं।



हथियारों पे हथ साफ कर के बाहर निकल गया चुपचाप।

अकस्म तादा! कुहारा व आना बहला देने के लिए कैप्टन हैं अब....



ये है डोगा

डोगा



असादा

मित्रों,

डोगा सीरीज की दो चित्रकथाएँ आपके समक्ष प्रस्तुत हो चुकी हैं। 'कफ़रू' एवं 'ये है डोगा' चित्रकथाओं को पढ़ने के लिए हम दोनों, यानी संजय गुप्ता और तरुण कुमार वासी ने भरपूर प्रयास किया है। चित्रकथाओं में आपके सुझावों का स्वागत है। अगली चित्रकथा 'मैं हूँ डोगा' में आप को कुछ सवाल, जैसे अदरक बाबा का क्या हुआ? सुरज ने अपना नाम डोगा क्यों रखा? क्या सुरज उर्फ डोगा अपना व अदरक बाबा का बदला लेगा? क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ? का जवाब मिलेगा एक शानदार चित्रकथा के रूप में।

संपर्क : संजय गुप्ता, तरुण कुमार वासी, 1603, डीवा कला, दिल्ली-6